प्रभात वर्मा

जन्म-तिथि : 1.1.1957

जन्म-स्थान : ककैला, नालन्दा

निवास : न्यू कॉलोनी, हरनाहा टोला, झाउगंज, पटना सिटी

सिच्छा : बी०ए०, एल-एल-बी०

परकासित पुस्तक :

1. बिहार के ई अनमोल रतन (मगही जीवनी संग्रह)
2. विधाता के विधान (मगही कहानी संग्रह)
3. करमलेख (मगही कहानी संग्रह)
4. तमासबीन (मगही कहानी संग्रह)

सम्पादन :

1. दस्तक प्रभात (हिन्दी साप्ताहिक पत्र)—सम्पादक

प्रभात वर्मा के लिखल 'असरा' एगो आंचलिक कहानी हे जेकरा में सहर के झाँकी हे। सहर के रहन-सहन, जिनगी के भाग-दौड़ आउ सुख-दुख एकरा में चित्रित हे। ई कहानी में एगो मजूर-जिनगी के संघर्स-कथा हे। ओकर सुख-दुख पाठक के अंत तक बाँधले रहऽ हे। ई एगो आदर्सोन्मुख कहानी हे। एकरा में एगो सिच्छित बेरोजगार के पीड़ा हे जे रिक्सा चलावेला मजबूर हो जाहे। कथा अमानवीयता के उजागर करऽ हे आउ नायक के संवेदना पाठक के तिलमिला देहे, बाकि अंत सुखद हो जाहे।

असरा

सड़क पर सरपट रिक्सा के पैडिल जोर से मारते सरजुगवा अप्पन ठेकाना दन्ने भागते जा रहल हल। ओकरा आँख के आगे सोनमतिआ के चेहरा घूम रहल हल, जे ओकर असरा में बइठल आग-बबूला हो रहल होयत। ऊ सोचे लगल कि आज ढेर देरी हो गेल हे। जब भी देरी हो जाहे, सोनमतिआ तरवा के लहर कपार चढ़ाके बोलऽ हे–'देखऽ, तोर असरा में हम केतना देरी से दुआरी पर बइठल ही। खैवो सेरा गेलो हे। काम के फ़िराक में तोरा खाहुँ-पीहुँ के इआद न रहऽ हो, बाकि जब देहे न रहतो त कमयबऽ कउची पर।' फिर पेयार से समझइते बोलऽ हे–'अप्पन सरीर पर धेयान दऽ! तोरे पर न हमहूँ ही। देखऽ तो, दिनो-दिन दुबरायले जा रहलऽ हे।' एही सब सोचते-सोचते सरजुगवा अप्पन रिक्सा झोपड़ी भिजुन आके रोकलक।

मगर रोज नियन आज सोनमतिआ दुआरी पर नयँ मिलल। सरजुगवा रिक्सा एक दन्ने लगाके भीतर झोपड़ी में घुस गेल। देखलक कि सोनमतिआ खटिया पर मुँह झाँप के पड़ल हे। सरजुगवा समझ गेल कि आज महरानी जी जादे गोस्सा हो गेलन हे !

ऊ खटिया तर जाके सोनमतिआ के मुँह पर ढकल चद्दर हटा देलक। देखलक कि सोनमतिआ सिसक रहल हे। सरजुगवा के करेजा संका से धक-धक करे लगल, काहे कि सोनमतिआ दोसर कउनो औरत नियन झुट्ठो-फुसो रोना-धोना नयँ मचावऽ हे। आज जरूर कोय बात होयत। सरजुगवा खटिया पर बइठते परेम भाव से सोनमतिआ से पुछलक–'का बात हे ? तूँ रो रहलऽ हे ? कोय बात हो गेल हे का ?'

सोनमतिआ खटिया पर से उठते रोते-सिसकते सरजुगवा से कहे लगल–'हमरा तूँ घरे पहुँचा दऽ। हम हिआँ काहेला रहम, जब हमरा से तोरा कोय मतलबे न हो ? भोरे से गेल-गेल तीन बजे अयलऽ हे। फिर तुरते भागबऽ तऽ रात के दस बजे अयबऽ कि बारह बजे अयबऽ, कोय नयँ जानऽ हे। एतना-एतना देरी पर खयबऽ, तऽ ई सरीर के का हाल होतो ?'

एगो लोटा में पानी भरके ऊ सरजुगवा के पास लाके रखते बोलल-'हमरो तो पेट हे नऽ, भूख से पेट अइँठते रहऽ हे। तोरा खिलयले बिना हम कइसे खा लीं ? चलऽ, हाथ-गोड़ धोके खा लऽ !'

सरजुगवा सोनमतिआ के बात सुनके ठठा के हँस देलक आउ बोलल–'बस, एतने सुन बात ला तूँ खटवास-पटवास ले लेलऽ हल। हम तो समझली कि कोय भयंकर बात हो गेल हे।'

फिर सरजुगवा सोनमतिआ के समझावे लगल–'सुनऽ, हमरा ला तूँ भुक्खल मत रहल करऽ। हम तो बाहरो में कुछ न कुछ खाइये लेही। हम्मर देर-सबेर के का करबऽ, रिक्सा चलावऽ ही न ! कोनो औफिस के बाबूगिरी तो करऽ ही नयँ कि समय से आयम आउ समय से जायम। कखनी कउन सवारी कहाँ के मिल जाहे, से कउन जानऽ हे ? तूँ समय पर खा लेवल करऽ आउ हमरा ला चिंता मत करल करऽ।' फिर परेम जतइते कहलक—'देखऽ, तूँ दुबरा के नरकट जइसन होयल जा रहलऽ हे। हमरा का होयल हे? मोटायल के मोटायले ही।'

लोटा के पानी उठाके सरजुगवा झोपड़ी के बाहर चल देलक। सोनमतिआ खाना निकासे लगल। जबतक सरजुगवा खयते रहल तबतक सोनमतिआ ओकरा भिर बइठ के पंखा झलते दु:ख-सुख बतिअयते रहल। खाना खाके सरजुगवा फिरो घर से निकस गेल आउ सोनमतिआ दुआरी पर खड़ा होके ओकरा जयते देखते रहल।

सरजुगवा सड़क पर आके सवारी खोजे के फेर में लग गेल। ऊ अप्पन रिक्सा सड़क के किनारे बड़का पेड़ के छाँह में लगाके ओकरे पर बइठ गेल आउ सुस्ताय लगल। ओकर दिल-दिमाग आज घूर-फिरके सोनमतिआ पर लगल हल। सरजुगवा के इआद ताजा हो गेल। बाप-माय के मरला के बाद पहिले-पहिल ऊ अप्पन गाँव छोड़ के बदकिस्मती के मार सहते ई सहर में कउनो रोजगार के तलास में आयल हल। ई सहर में ओकर जानो-पहचान के कोय नयँ हल। नौकरी के जोगाड़ में इहाँ-उहाँ मारल चलल, बाकि सरकारी तो दूर, कल-करखाना, दर-दोकान में कोय ओकरा नयँ रखलक। ऊ जेकरा भिर जाय, ओही ओकर हाल सुनके पूछे–'इहाँ तोर जान-पहचान के कोय हे जे तोर गारंटी ले सकऽ हे कि तूँ कोय समान लेके भाग नयँ जयबऽ ?'

हार-पार के ऊ कोय छोट-मोट काम के फिराक में लग गेल, काहे कि ओकरा खाय ला भी कोय जोगाड़ नयँ हल। इहे से ऊ टीसन पर मोटरी ढोवे के काम करे लगल। दिन भर खट के कमाय, तऽ दू-चार रुपइया कमा ले हल। फुटपाथ पर लगल लिट्टी-सतुआ के दोकान में खाय आउ रात के टीसन के मोसाफिरखाना में जाके सुत रहऽ हल।

फिर एगो होटल में बरतन मइँजे आउ जुट्ठा धोवे के काम मिल गेल हल। न चाह के भी पेट खातिर ई काम ओकरा करे पड़ल। होटल के मालिक अइसन कि बात पीछू गालिये-गलौज आउ मार-पीट करऽ हल। ओकर ई बेवहार सरजुगवा के तनिक्को न सोहाय। ऊ सोचऽ हल—'हम गरीब जरूर ही, मगर पेट खातिर इज्जत तो नयँ खतम कर देम।' एक दिन होटल मालिक के बेवहार से ऊब के ऊ काम-धाम छोड़ देलक। तब ऊ का करे, कहाँ जाय ? ओकर समझ में कुच्छो न आ रहल हल। काम खोजे लागी ऊ कउन जगह न गेल, बाकि कहीं काम न मिलल।

एक दिन गाँधी मैदान के बेंच पर बइठल हल तभिये ओकरा भिर एगो अधबैस रिक्सावाला सुस्ताय के खेयाल से ओकरा पास आके बइठल। जब ऊ रिक्सावाला सरजुगवा के चिन्ता में मुरझायल चेहरा देखलक, तऽ ओकरा से पुछलक–'का बात हे बाबू ! लगऽ हे कि तूँ कोय बड़ संकट में पड़ल हऽ ।'

अधबैस उमर के रिक्सावाला सिधेसर के बात सुनके सरजुगवा के मन में आस जगल आउ बाते-बाते में ऊ अप्पन बदकिस्मती के बात सुरू से अंत तक फारे-फार सुना देलक। सिधेसर ओकर हाल जान के ढाढ़स देते कहलक–'सरजुग, ई माया के दुनिया हे आउ इहाँ तरह-तरह के लोग हथ। अप्पन सवारथ के चलते दूसरा के जान लेवे वला के भी ई दुनिया में कमी न हे। जिनगी में घबरयला से काम न चलऽ हे। दुःख से लड़े वला ही सुख के भागी बनऽ हे। तूँ चलऽ, हमरा साथे रहिहऽ !'

सिधेसर अपना बारे में सरजुगवा के बतयलक–'हम छोट जात के गरीब अदमी ही। हमरो घर इहाँ से बहुत दूर गाँवे में हे। इहाँ हम रिक्सा चलाके किराया के मकान में अप्पन बेकत आउ दूगो लइकन के साथे कोय तरह से जिनगी गुजर-बसर कर रहला हे। अगर तोर मन करो, तऽ हमरा साथे चल सकलऽ हे। तोरो रिक्सा चलावे ला सिखा देम। जबतक तोरा खाय-पीये के कोय जोगार नयँ होवऽ हे, एकरे से कमइहऽ-खइहऽ। घबराय से जीवन नयँ चलऽ हे, हिम्मत करके दुःख के दिन काटे पड़ऽ हे।'

सरजुगवा के साथे लेके सिधेसर अप्पन डेरा पर पहुँच गेलन। घरे आके सिधेसर सरजुगवा के ओसारा पर बिछल चउकी पर बइठा के भीतर चल गेलन। कुछ देरी के बाद एगो चउदह-पन्दरह बरिस के गोल-मटोल खूब सुन्नर चेहरा-मोहरा वाली लइकी लोटा में पानी लाके ओकरा भिर रखते बोलल—'हाथ मुँह धो लेथिन।'

सरजुगवा ओकरा देखलक तऽ देखते रह गेल। ऊ सोचे लगल- 'गरीबो के घर में एतना सुन्नर लड़की होवऽ हे ?'

लड़किया जब सरजुगवा के एकटक अपना दन्ने ताकते देखलक, तऽ सरमा के उहाँ से भाग गेल। एक्के बेर देखला पर सरजुगवा के मन में ऊ लइकी बस गेल हल। ओकर नाम हल सोनमतिआ। सोनमतिआ सिधेसर के बड़ बेटी हल। ऊ सतमा तक पढ़ल हल। सिलाय-कटाय-फड़ाय सब जानऽ हल। ऊ सुलछनी बेटी हल। दिन भर घर के काम के साथे बाप-माय के सेवा में ओकर दिन बीतऽ हल। जब पहिले-पहिल सोनमतिआ सरजुगवा के देखलक हल, तऽ ओकरो ऊ बहुत अच्छा लगल हल।

सिधेसर दुसरके दिन से सरजुगवा के रिक्सा चलावे ला सिखा के एगो रिक्सा भाड़ा पर दिला देलन। सोलह बरिस के हट्ठा-कट्ठा सरजुगवा के पहिले तो रिक्सा खींचे में बड़ी दिक्कत होयल, मगर समय आउ परिस्थिति ओकरा में रिक्सा खींचे के आदत डाल देलक। दिन भर रिक्सा चलाके जब सरजुगवा घरे आवऽ हल, तऽ सोनमतिआ दरवाजे पर मिल जा हल। ओकरा देखिये के ओकर दिन भर के थकान मेट जा हल। ओकरा खिलाना-पिलाना सोनमतिए के काम हल।

सिधेसर हीं सरजुगवा के रहते एक बरिस बीत गेल। सोनमतिआ आउ सरजुगवा में एक-दूसरा के परती परेम-भाव जाग गेल। दुन्नो के परेम-भाव सिधेसर आउ उनकर बेकत से छुपल नयँ रहल। एक दिन सिधेसर सरजुगवा से पुछलन-'सरजुग, इधर देख रहली हे कि सोनमतिआ से तोर परेम-भाव बढ़ल जा रहलो हे। तूँ तो जानऽ हऽ कि हम छोट जात के अदमी ही आउ तूँ बड़का जात के लड़का हऽ। सोनमतिआ से तोर मेल कइसे हो सकऽ हे ? तइयो जमाना के लोग हमनी के इज्जत पर अंगुरी उठावे, एकरा से पहिले हम सोनमतिआ के बियाह तोरा से कर देवेला चाहऽ ही।'

सरजुगवा सिधेसर के बात सुनके बोलल–'हम सोनमतिआ के अप्पन दुलहिन बनाके अप्पन भाग्य पर खुस हो जायम। एकरा में बड़-छोट के कोय बात नयँ हे। बस, तोर आसीरवाद हमरा चाही।'

सिधेसर के मन हुलस गेल। सरजुगवा अइसन कमासुत लड़का तो पहिलहीं से पसन्द हल उनका। बस, ओकर राय भर के देरी हल। सिधेसर बियाह के तइयारी में लग गेलन। शुभ घड़ी में सोनमतिआ के बियाह सरजुगवा से हो गेल। दुन्नो एगो डोरी से बंध गेलन। बियाह के बाद सरजुगवा सोनमतिआ के साथे लेके रजिन्दर नगर में एगो झोपड़ी बनाके रहे लगल।

सरजुगवा के सोचते-सोचते केतना देरी हो गेल से ओकरा पतो नयँ चलल। ओकर सोच के लड़ी तो तब टूटल, जब एगो सूट-बूट पहिनले बाबू अप्पन औरत के साथे ओकरा भिर आके बोललन–'ए रिक्सा वाला, होटल मौर्या चलोगे ?'

सरजुगवा रिक्सा से उतरते बोलल–'हँ बाबू, चलम।' आउ दुन्नो औरत-मरद के रिक्सा पर बइठयले ऊहाँ से चल देलक। मौर्या होटल के पास पहुँच के ऊ रिक्सा रोक देलक। रिक्सा से उतर के बाबू अप्पन औरत के साथे सरजुगवा के बिना कुछ बोलले बीस रुपइया के नोट थमाके होटल में घुस गेलन। सरजुगवा मुसका के सोचे लगल—'अइसन कय बार होयल हे, जब कोय बाबू पाँच रुपइया के जगह पर दस-बीस रुपइया देके बिना कुछ बोलले चल जा हथ। बाकि कोय-कोय बाबू तो एक-दू रुपइया लागी हीला-हवाला करे के साथ-साथ गाली-गलौज भी करऽ हथ।

साँझ हो गेल हल। कम मेहनत में आज ढेर कमाई हो गेल हल, एही से सरजुगवा बहुत खुस हल। होटल के पास रिक्सा लगाके ऊ होटल में गेल औरत-मरद के असरा देखे लगल। एक घंटा असरा देखला के बाद जइसहीं ऊ रिक्सा बढ़यलक हल कि दुन्नो औरत-मरद होटल से निकल के ओकरा रिक्सा रोके ला इसारा कयलन। सरजुगवा ठहर गेल। दुन्नो औरत-मरद रिक्सा पर आके बइठ गेलन आउ बोललन–'वहीं चलो जहाँ से हमलोगों को लाये हो।'

रिक्सा पर बइठल बाबू सरजुगवा के चाल-ढाल आउ सुन्नर काया देख के पुछलन–'तुम पढ़े-लिखे लगते हो।'

'जी हँऽ, मैट्रिक तक पढ़ल ही बाबू !' रिक्सा के घंटी टनटनइते सरजुगवा बोललक।'

'तो तुम कहीं नौकरी क्यों नहीं करते ?' बाबू पुछलन।

'नौकरी, गरीब के नौकरी कउन देतइ बाबू ?' सरजुगवा कुपित होके बोललक- 'नौकरी के तलास तो बहुत कइली, बाकि न मिलल। थक-हार के रिक्सा चलावे पड़ रहल हे।'

सरजुगवा के बात सुनके दुन्नो औरत-मरद आपस में ओकरे बारे में बतिआय लगलन। ठेकाना पर आके सरजुगवा रिक्सा रोक देलक। रिक्सा से उतरते बाबू सरजुगवा के हाथ में फिर बीस रुपइया के नोट आउ एगो 'विजिटिंग कार्ड' देते बोललन—'देखो, इस क़ार्ड पर हमारी कम्पनी का पता लिखा हुआ है। तुम कल

इसी पते पर आकर हमसे मिलना। हम तुमको नौकरी दिलवा देंगे।' एतना कहके बाबू औरत के साथे आगे बढ़ गेलन। सरजुगवा बड़ी देरी तकले हाथ के पइसा आउ पता वाला कार्ड देखते रहल। ऊ आज बहुत खुस हल।

रात खानी अप्पन झोपड़ी में लउट के सोनमतिआ के हाथ में दिन भर के कमाई थमइते कहलक–'लगऽ हो कि दु:ख के दिन अब बिसरे वाला हो।' सोनमतिआ भी जादे पइसा देख के हुलस रहल हल।

दुसरका दिन सरजुगवा कार्ड में लिखल कंपनी के ऑफिस के पता पूछते-पाछते बाबू भिर जा पहुँचल। बाबू ओकरा देखते कुर्सी पर बइठ के नौकरी ला दरखास लिखेगा कहलन। जब सरजुगवा दरखास लिख देलक तऽ बाबू ओकरा अप्पन ऑफिस के चपरासी बहाल कर लेलन।

ई खुसखबरी जब सोनमतिआ सुनलक तऽ बहुते खुस होयल आउ सोचे लगल-'इनकर कोय बहाना अब हमरा भिर नयँ चलत।' सरजुगवो खुस हल, काहे कि जीवन में दु:ख भोगे घड़ी सुख के जे असरा ऊ लगयलक हल, विधाता के बनावल विधान में ओकर असरा अब पूरा हो गेल हल।

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. (क) कहानी के सीर्सक 'असरा' काहे रखल गेल हे ? तर्क देके बतावऽ।
   (ख) सोनमतिआ सरीर पर धेयान देवेला काहे कहलक ?
   (ग) सहर में अयला पर सरजुगवा कउन-कउन काम कयलक आउ काहे ?
   (घ) 'विधाता के बनावल विधान' कउन बात के संकेत करऽ हे ? का ओकरा तूँ सही मानऽ ह ?
   (ङ) कहानी के नायिका कउन हे ? ओकर चरित्र के पाँच गो बिसेसता बतावऽ।

लिखित :

1. कहानीकार प्रभात वर्मा के चार पंक्ति में परिचय दऽ।
2. कहानी के तत्व बतावँइत 'असरा' कहानी के कसउटी पर कसऽ ।
3. कहानी के नायक कउन हे ? ओकर चरित्र-चित्रन करऽ ।
4. सोनमतिआ सरजुगवा के जीवन में आके कउन परिवर्तन ला देलक ?
5. सरजुगवा गाँव छोड़ के सहर में काहे ला आयल ?
6. सरजुगवा सहर में आके रिक्सा काहे चलावे लगल ?
7. सरजुगवा आउ सोनमतिया के बीच परेम कइसे भेल ? ऊ स्थिति के बरनन करऽ ।
8. सरजुगवा के नौकरी कइसे मिलल ?

भासा-अध्ययन :

1. नीचे लिखल मुहावरा के वाक्य में प्रयोग करऽ :—
   (क) तरवा के लहर कपार पर चढ़ना
   (ख) ठठा के हँसना
2. पाठ से पाँच गो सरल वाक्य चुनके लिखऽ ।

योग्यता-विस्तार :

1. रिक्सा चालक के कठिन जीवन देख के तोर मनोदसा पर का परभाव पड़ल ?
2. परिश्रम पर एगो छोटा निबंध लिखऽ।

सब्दार्थ :

सरपट — तेज
खयको — बुतात / भोजन
सेरा गेल — ठंढा हो गेल
भिजुन — नगीच
भुट्ठो–फुसो — भूठमूठ
कोय — कोई

सुस्ताय लगल — अराम करे लगल
तलास — खोज
जोंगाड़ — उपाय
न सोहाय — अच्छा न लगे
अधवैस — अधेड़ उमर के
बदकिस्मती — खराब भाग्य
साहस — हिम्मत
सुलछनी — अच्छा लक्षन वाली
हट्ठा-कट्ठा — मजबूत सरीर के
कमासुत — कमाय वाला
असरा — आसा
विधाता — भाग्य निर्माता
विधान — नियम-कानून

•••